ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

पी-एच.डी उपाधि हेतु प्रस्तुत

<u>शोध-प्रारूप</u>

विषय : राजकमल आ' ललितक मैथिली कथाक तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी : नेहा कुमारी

विषय : मैथिली

संकाय : मानविकी

विश्वविद्यालय : ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोध-निर्देशक

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा
सहायक प्राचार्य एवं अध्यक्ष
मैथिली विभाग ,
रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी

शोधार्थी

नेहा कुमारी
21/03/24

नेहा कुमारी
यू .जी.सी. नेट - जे.आर.एफ
HR03100044
पैट रौल नं. - **E2211021**
ग्राम+पो.--राँटी,थाना-राजनगर
जिला - मधुबनी , पिनकोड - **847211**

राजकमल आ' ललितक मैथिली कथाक तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

राजकमल आ' ललित मैथिली कथा साहित्यक मूर्धन्य हस्ताक्षर छथि। ई दुनू कथाकार नहि मात्र मैथिली साहित्य अपितु सम्पूर्ण भारतीय साहित्यमे अपन नाम अंकित कयने छथि ।कथाकार राजकमल (1929ई -1967ई०)विविध कथाक माध्यमसँ अपन विचार, चिंतन ओ अनुभूतिकेँ सोझाँ रखने छथि। मैथिली कथा साहित्यमे राजकमल जाहि मान्यता; सिद्धांत, विचार ओ दृष्टिकोणक उद्भावना कएलनि ओ मैथिली साहित्यक लेल नव प्रयोग मानल जाइत अछि। सूक्ष्म जीवन दर्शन आ' मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कए कथाक विराट रूप सोझाँ अनने छथि। हिनक रचनाक क्षेत्र विस्तृत अछि, जाहिमे कथा संग्रह ललका पाग (1967ई०), कृति राजकमलक (1980 ई०), एकटा चम्पाकली एकटा विषधर (1983ई.) आ' हिनक सभ कथाक सम्मिलित रूप साँझक गाछ (2003ई.) महत्त्वपूर्ण अछि। तहिना ललित (1932-1983)अपन कथामे विषयवस्तु आ कथाक भाषा एवं शिल्पक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण छथि। हिनक कथा साहित्यक अध्ययन अनुशीलनसँ बोध होइछ जे सामाजिक वातावरणक विशिष्ट संदर्भमे ओकर यथास्थितिक विस्तृत विश्लेषण ओ कएलनि। हिनक प्रकाशित कथा संग्रह 'प्रतिनिधि'(1964ई.) अछि। एहि दुनू कथाकारक मैथिली कथाक तुलनात्मक अध्ययन विविध बिंदुक आधारपर होएत तकर संक्षिप्त रूप एतए देखबामे आओत ।

शोध विषयक महत्व

कोनहुँ भाषा-साहित्यमे साहित्यकारक योगदान अति महत्त्वपूर्ण भए जाइत अछि। जखन कोनो दू वा दूसँ अधिक कृतिक मध्य तुलनात्मक आधारपर विमर्श होइत अछि तँ ओ खास कार्यक अंतर्गत अबैत अछि। 'राजकमल' आ' 'ललित' कथामे समाजक

नेहा कुमारी
21/03/24

अनेक समस्याक चित्रण भेल अछि। दुनू मूर्धन्य कथाकार अपन रचनामे मानवीय पक्ष, आर्थिक पक्ष आ सामाजिक पक्ष आ' ताहि लेल संघर्ष आ समाधानकें सोझाँ अनलनि । ताहि कारणें एहि दुनू कथाकारक कथाक तुलनात्मक अध्ययन विभिन्न बिंदुक आधारपर कएल जाएत, जाहिसँ दुनू कथाकारक महत्त्व विभिन्न प्रकारसँ सिद्ध होएत।

शोधक आवश्यकता

मैथिली साहित्यक समस्त विधा खूब समृद्ध अछि मुदा ताहिमे कथा विधाक विराटता परिलक्षित होइत अछि। कथा विधाकें समृद्धशाली बनएबामे राजकमल चौधरी आ' ललित महत्त्वपूर्ण योगदान देने छथिन । हिनका लोकनिक कथाक समुचित तुलनात्मक मूल्यांकन प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रुपें शोध प्रबंधमे स्थापित करब। एहिसँ हिनका लोकनिक कथाक स्थूलसँ सूक्ष्मातिसूक्ष्म अवलोकन क' प्रयोजनमूलक कार्य संभव भ' सकत । सामान्य सँ विशिष्ट पाठकलोकनिकें एहि दुनू कथाकारक कथा साहित्यसँ नव दृष्टि प्राप्त हेतनि ।

पूर्वमे कएल गेल शोध विषयक कार्य

एहिसँ पूर्व उल्लिखित दुनू कथाकार पर स्वतंत्र रूपसँ शोध कार्य भेल अछि। मुदा हमरा जनैत ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ अन्य विश्वविद्यालयमे 'राजकमल आ' ललितक मैथिली कथाक तुलनात्मक अध्ययन' विषयपर शोध कार्य नहि भेल अछि। एहि कारणें हम एहि विषयपर शोध कार्य करबाक निर्णय कएलहुँ। हमर मूल शोध प्रबंधमे एहि विषय पर विस्तारसँ चर्चा कएल जाएत ।

नेहा कुमारी
21/03/24

शोधक स्रोत एवं प्रविधि

राजकमल आ' ललित विषयपर उपलब्ध प्रकाशित पोथी, समकालिक साहित्यकार एवं समालोचकगण द्वारा कएल गेल कार्य, कथाकार द्वारा एहि विषयपर विविध प्रकाशित पोथी, पत्र-पत्रिका आ कथाकार सम्बन्धी कार्य कएनिहार साहित्यकार लोकनिसँ चर्चा परिचर्चाक आधारपर शोध- कार्य कएल जाएत । दुनू कथाकार पर एहिसँ पूर्वमे भेल अनुसंधान कार्यक अध्ययन कएल जाएत। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक पुस्तकालय, केन्द्रीय पुस्तकालय एवं चेतना समिति, पटनाक पुस्तकालयक विशेष आवश्यकता पड़त।

उक्त स्रोतक आधारपर शोध कार्यकें तुलनात्मक पद्धतिक अनुसार अध्ययन आ विश्लेषण कएल जाएत । एहि विधिक उपयोगसँ कथाक मध्य कतेको नवीन तथ्य उद्घाटित होइत अछि, संगहि कथाक वस्तुनिष्ठता आ विशिष्टताकें, रहस्यमयता / अंतरंगता, शिल्प - शैलीगत समानता / भिन्नता, तत्कालीन आर्थिक , सामाजिक, राजनीतिक समस्याक अध्ययन करबामे सेहो सहयोगी कारकक रूपमे ई विधि सहायक होइत अछि ।

उद्देश्य

राजकमल आ' ललितक मैथिली कथाक सम्यक रुपें तुलना कए दुनू कथाकारक कथा सभक मुख्य पक्षकें शोध - कार्यमे सोझाँ राखल जाएत । एहि द्वारा कथाकारक कएल गेल कार्यमे साम्य आ वैषम्य, जे देखल जाएत तकरा इंगित क' पाठकलोकनिक समक्ष राखब एहि शोध कार्यक उद्देश्य होएत ।

नेहा कुमारी
21/03/24

शोध कार्यमे तुलनाक आधारपर दुनू रचनाकारक व्यक्तित्वक वर्णन सहित कथानक / विषयवस्तु / कथावस्तु, भाषा एवं शिल्प, नारी विमर्श, सामाजिक चेतना, विचारधारा आदिक तकनीकी पक्षपर विश्लेषण - मूल्यांकन होएत ।

शोध -प्रबंधक संभावित रूपरेखा

प्रस्तावित विषयपर शोध कार्य करबाक हेतु तत्काल एहि शोध- प्रबंधकें निम्न अध्यायमे विभक्त कएल गेल अछि , मुदा अनुसंधान कार्य सम्पादनक क्रममे एहिमे परिवर्तन आ परिवर्द्धनक संभावना भ' सकैत अछि। अध्यायक रूपरेखा निम्नलिखित अछि -

पहिल अध्याय:

→ राजकमल आ' ललितक जीवन ओ साहित्य

दोसर अध्याय :

→ राजकमल आ' ललितक कथाक विषयवस्तु

तेसर अध्याय :

→ राजकमल आ' ललितक कथाक भाषा एवं शिल्प

चारिम अध्याय:

→ राजकमल आ' ललितक कथाक पात्र

पाँचम अध्याय :

→ राजकमल आ' ललितक कथामे सामाजिक चेतना

नेहा कुमारी
21/03/24

छठम अध्याय :

राजकमल आ' ललितक कथामे नारी चेतना

परिशिष्ट :-

क) उपसंहार

ख) अधीत ग्रंथक सूची

पहिल अध्याय : राजकमल आ' ललितक जीवन ओ साहित्य

एहि शोध-प्रबंधक पहिल अध्यायमे राजकमल आ' ललितक जीवन - परिचयसँ अवगत कराओल जाएत ।हिनकालोकनिक साहित्यिक अवदानकेँ संक्षिप्त रूपें प्रस्तुत कएल जाएत । राजकमलक मैथिली साहित्यमे अविस्मरणीय योगदान अछि। आधुनिक मैथिली कथा परंपरामे राजकमल नव मोड़ अनलनि। विषय आ' शिल्प दुनू स्तरपर मैथिली कथामे नव प्रयोग राजकमल कयलनि । दोसर दिस ललित सामाजिक समस्याक विशेष सन्दर्भमे अद्भुत सूक्ष्मदर्शिता आ' सहानुभूति पूर्वक विचार कयलनि। जीवन ओ साहित्यक चर्चासँ हिनका दुनूक प्रसंग सम्यक जानकारी भेटि सकत। दुनू कथाकारक कृति कतेको अर्थमे महत्वपूर्ण अछि से देखबामे आओत ।

दोसर अध्याय : राजकमल आ' ललितक कथाक विषयवस्तु

शोध-प्रबंधक दोसर अध्यायमे राजकमल आ' ललितक कथाक विषयवस्तुपर विश्लेषण होएत ।एहि दुनू कथाकारक कथाक विषयवस्तुक विश्लेषणक आधार रहत तुलनात्मक विधि । एहि अध्यायमे देखल जाएत जे कोन रूपें कथाक विषयवस्तु चयन भेल अछि आ मैथिली साहित्यमे एकर की महत्व छैक। कोनो कथाक विषयवस्तु अति महत्वपूर्ण

नेहा कुमारी
21/09/24

तत्व होइत आछि। तुलनात्मक अध्ययनक उपरांत दुनू कथाकारक कथानकक मध्य समता ओ विषमताक आधारपर निष्कर्ष आओत।

तेसर अध्याय : राजकमल आ' ललितक कथाक भाषा एवं शिल्प

शोध प्रबन्धक तेसर अध्यायमे राजकमल आ' ललितक कथा सभमे प्रयोग भेल भाषा एवं शिल्प कोन प्रकारक अछि, तकर तुलनात्मक आधारपर विश्लेषण कएल जाएत। कोनो कथाक महत्वपूर्ण तत्वक अंतर्गत अबैत अछि- भाषा एवं शिल्प जाहिसँ कथा रुचि सम्पन्न भए जाइत अछि । दुनू कथाकार अपन पूर्ववर्ती कथाकारक भाषा एवं शिल्प विधानक अनुसरण नहि कए नव रीतिएँ विषयवस्तुक उपस्थापन कयलनि जे मैथिली कथा साहित्यक लेल नव प्रयोग मानल जाइत अछि।

चारिम अध्याय : राजकमल आ' ललितक कथाक पात्र

कथाक विषयवस्तु पात्रपर निर्भर करैत अछि। साहित्यक संबंध समाजसँ होइत अछि आ' समाजेक लेल होइत अछि तें कथाकार अपन कथानकक अनुरूप सुपात्र आ' कुपात्रकें ग्रहण करैत छथि जे समाजकें प्रभावित करैत अछि। पात्र जतेक जीवन्त आ' सशक्त रहत,कथा ओतबे सफल होएत।

राजकमल आ' ललितक कथाक पात्रसभ महनीय अथवा आदर्श नहि रहैत अछि। हिनकालोकनिक पात्रक चरित्र समुदायक सभ व्यक्तिसँ पृथक रहैत छनि। उदाहरणार्थ 'ललित'क 'रमजानी' कथाक मुख्य पात्र रमजानी निम्नवर्गीय मजदूर अछि,जे ताँगा चालकक सङ्ग अशिक्षित,नशाखोर रहितहुँ विचारवान आ' प्रगतिशील विचारधाराक लोक अछि। ताँगा बेचि रिक्सा किनबाक विचार ओ नशाखोरी छोड़ि बेटाकें पढ़ायब नायक रमजानीक प्रगतिशील विचारधाराक द्योतक थिक।

नेहा कुमारी
21/03/24

पाँचम अध्याय : राजकमल आ' ललितक कथामे सामाजिक चेतना

साहित्य समाजक दर्पण थिक। जँ समग्रतामे देखल जाए तँ ई अनुभव होइत अछि जे साहित्य सर्जन समाजहिक लेल होइछ। समाजक नीक-अधलाह, उन्नति-अवनति, साम्य-वैषम्य, आशा-आकांक्षा, समस्या ओ तकर समाधान, चेतना - जागृति आदि विषयक रचना साहित्यमे चित्रित रहैत छथि। तें सामाजिक चेतनाक विकासमे साहित्यक महत्वपूर्ण योगदानकें अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ । राजकमल आ' ललितक कथा सभमे सामाजिक चेतना कोन रूपमे आयल अछि तकरा एहि अध्यायमे तुलनात्मक अध्ययनक आधार पर विश्लेषित कए शोध कार्यमे राखल जाएत।

छठम अध्याय : राजकमल आ' ललितक कथामे नारी चेतना

शोध प्रबंधक छठम अध्यायमे राजकमल आ' ललितक कथामे कोन प्रकारक नारी - वर्गक चित्रण अछि, तकर तुलनात्मक आधारपर विश्लेषण कएल जाएत । कथामे नारी स्वतंत्रता, दाम्पत्य प्रेम, प्रेमी - प्रेमिकाक प्रसंग, नारीक सामाजिक प्रतिष्ठा, नारीक कुंठा आदि विषयक उपस्थापन कोन रूपमे भेल अछि, से सभ समक्ष आओत। अपन मान सम्मान आ' अधिकार प्राप्ति हेतु सतत समर्पित ई वर्ग जागरुक ओ चेतनासँ सम्पन्न अछि। मैथिली कथा साहित्यमे नारी - विमर्शक केन्द्रमे दुनू कथाकारक कथाक तुलनात्मक दृष्टिसँ अवलोकन ओ विश्लेषण कतेक आवश्यक अछि से एहि अध्यायमे देखबामे आओत ।

परिशिष्टः

क) उपसंहार :

शोध-प्रबंधक उपसंहार शीर्षकक अंतर्गत समस्त शोध-कार्यक सारांश प्रस्तुत कएल जाएत। शोध-कार्यक विभिन्न शोध बिंदुक अंतर्गत जे कार्य कएल जाएत तकरा

नेहा कुमारी
21/03/24

संक्षिप्त रुपें एहूठाम विवेचन कएल जाएत। दुनू कथाकारक कथा कतेको अर्थमे मैथिली साहित्यमे महत्वपूर्ण अछि, से एतय देखाओल जाएत । भविष्यमे शोध कर्ता, शिक्षक - प्राध्यापक, पाठक लोकनिक ई शोध-कार्य महत्वपूर्ण हुअए , ताहि दृष्टिसँ शोध- कार्यक संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत कएल जाएत ।

ख)अधीत ग्रंयक सूची :

1.चौधरी, स्व. राजकमल; 2008 - ललका पाग; विद्यापति परिषद् शहरपुरा (सिंदरी) (दोसर संस्करण)

2. झा देवेन्द्र ; 2012 राजकमल (विनिबंध) ; साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

3. मिश्र प्रो० आनंद; भारद्वाज मोहन ; 2020 कृति राजकमलक; मैथिली अकादमी, पटना (तेसर संस्करण)

4. नवीन, देवशंकर ; 2020 ;साँझक गाछ; राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. अशोक राजपथ, पटना (दोसर संस्करण)

5. ललित ;1964 ; प्रतिनिधि ; मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, दरभंगा

6. आनंद, विभूति ; 1982 ; श्री ललित आ हुनक कथा - यात्रा ; भारती संस्थान , पटना

7.आनंद विभूति ; 2004 ; ललित (विनिबंध) ;साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

8. आनंद विभूति; 2012 ; ललित समग्र; मैथिली अकादमी, पटना

नेहा कुमारी
21/03/24

9. झा 'श्रीश' दुर्गानाथ ; 1991 ; मैथिली साहित्यक इतिहास ; भारती पुस्तक केन्द्र ,दरभगा (नवीन संस्करण)

10. ठाकुर ,वीणा ; 2008 ; इतिहास दर्पण ; श्री राम रतन झा , दरभंगा

11. झा ,दिनेश् कुमार ;2012 ; मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास ; मैथिली अकादमी, पटना (चारिम संस्करण)

12. मिश्र ,मायानंद ; 2014; मैथिली साहित्यक इतिहास ; किसुन संकल्प लोक , सुपौल

13. मिश्र , जयकांत; 2015 ; मैथिली साहित्यक इतिहास ; साहित्य अकादेमी , नई दिल्ली (पुनर्मुद्रण)

14. झा , भीमनाथ ;1985 ; परिचायिका ; भवानी प्रकाशन, पटना (दोसर संस्करण)

15. पाठक अमरेश ,भारद्वाज मोहन ; 1977; कथा संग्रह ;मैथिली अकादमी , पटना

16. देवी ,कामांख्या ; 1982 ; मैथिली कथा धारा ; साहित्य अकादेमी ,नई दिल्ली

17. झा, बासुकीनाथ ;2003; मैथिली कथाक विकास ; साहित्य अकादेमी ,नई दिल्ली

18. झा 'रमण' रमानंद ; 2016 ;मैथिली कथाक समाज : भाषा एवं शिल्प ;चेतना समिति, पटना

19. झा 'रमण' रमानंद ;2020 ;मैथिली कथाक धाप ;अखियासल प्रकाशन लालगंज,सरिसब -पाही मधुबनी

20. प्रसाद, डॉ० मेघन ;1996; मैथिली कथाकोश (1915 -1995) : अनुसंधान एवं आलोचना ; पूनम प्रकाशन, समस्तीपुर

21.मिश्र 'अमर' चन्द्रनाथ ; 2011; मैथिली पत्रकारिता इतिहास ; मैथिली अकादमी, पटना (दोसर संस्करण)

नेहा कुमारी
21/03/24

पत्र - पत्रिका

1. मिथिला मिहिर
2. वैदेही
3. घर - बाहर
4. भारती मंडन

शोध- निर्देशक

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा

सहायक प्राचार्य एवं अध्यक्ष

मैथिली विभाग ,

रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी

शोधार्थी

नेहा कुमारी

21/03/24

नेहा कुमारी

यू .जी.सी नेट - जे.आर. एफ.

HR03100044

पैट रौल नं. - **E221102**

ग्राम+पो.-राँटी,थाना-राजनगर

जिला - मधुबनी , पिनकोड- 847211